तबलीग़ी जमाअत का फरेब

लेखक मौलाना सय्यद तोराबुल हक़ क़ादरी
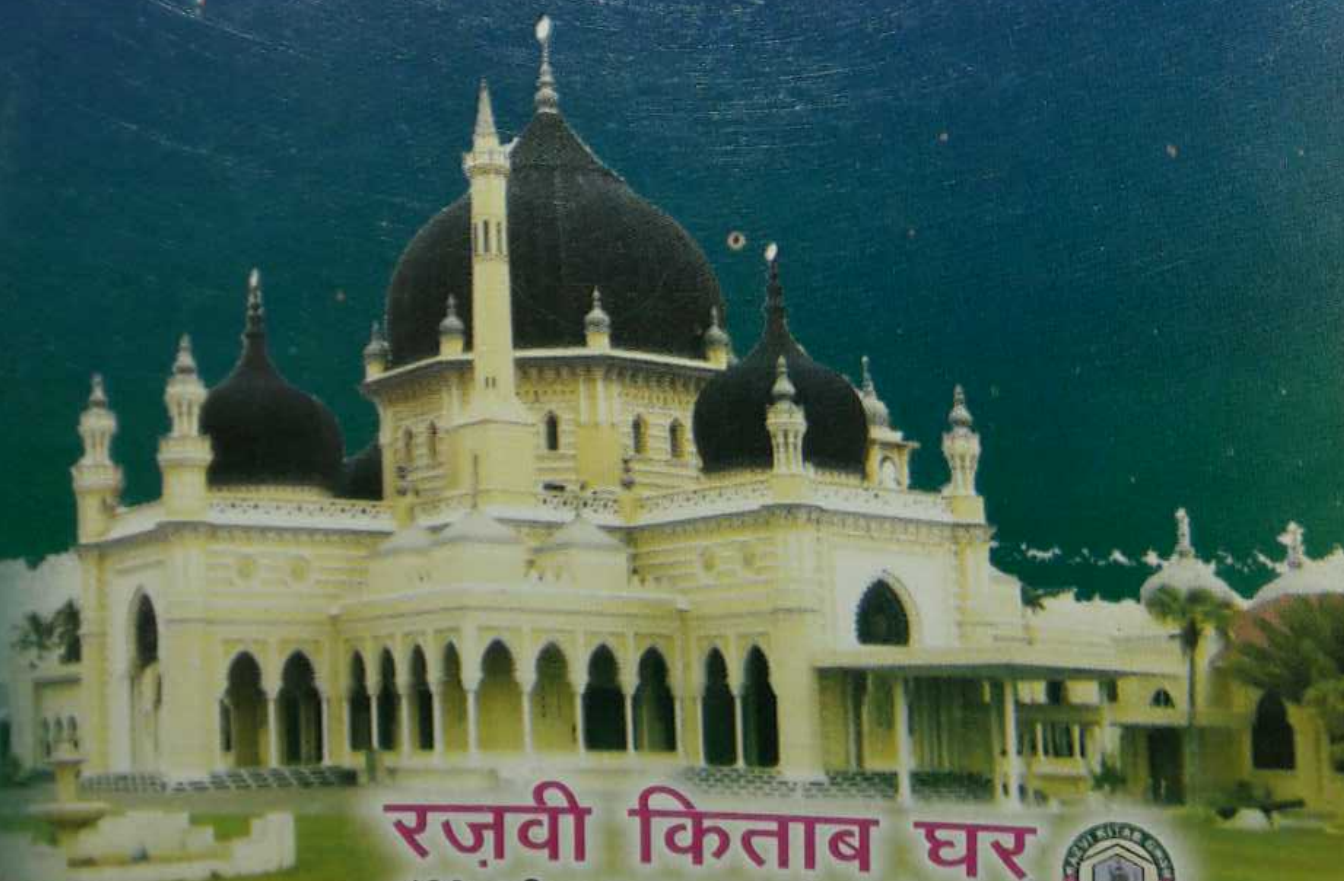
रज़वी किताब घर
423, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-6

तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब

लेखक

मौलाना सैयद तुराबुल हक़ क़ादरी रज़वी

अनुवादक

इक़बाल अहमद ख़ाँ अशरफ़ी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006, Phone : 011 - 23264524

ISBN 01-89201-30-9

नामे किताब : तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब

लेखक : मौलाना सैयद तुराबुल हक़ क़ादरी रज़वी

अनुवादक : इक़बाल अहमद ख़ाँ अशर्फ़ी, गोरखपूरी

बइहतिमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

प्रूफ़–रीडिंग : मुहम्मद ज़ियाउद्दीन क़ादरी

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली–6

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली–6

सफ़हात : 32

क़ीमत : 6/-

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006

फ़ोनः नं० : 011 - 23264524

महाराष्ट्र में मिलने का पता

रज़वी किताब घर
114, गैबी नगर, भिवंडी,
ज़िला : थाणा (महाराष्ट्र)
फ़ोनः नं० 02522-220609

रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, गैबी पीर
रोड, भिवंडी (महाराष्ट्र)
फ़ोनः नं० 9823625741

तबलीग़ी जमाअत

आपने अकसर देखा होगा कि शहरों और देहातों की मस्जिदों में पेशे ईमान के सलाम फ़ेरते ही कुछ लोग खड़े हो जाते हैं और नमाज़ियों से दरख़्वास्त करते हैं कि "आप लोग नमाज़ के बाद कुछ देर के लिये मस्जिद में बैठ जायें ताकि हम मिल–जुल कर अल्लाह और रसूल की बातें कर सकें।" फिर नमाज़ के बाद उनमें से कोई साहब तबलीग़ी नेसाब नामी किताब पढ़ते हैं और फिर चन्द अफ़राद पर मुश्तमिल गिरोह गली कूचों में घूम कर तबलीग़ करते हैं। यह जमाअत उर्फे आम में तबलीग़ी जमाअत के नाम से मशहूर है। इब्तेदाई तौर पर इस जमाअत के जो प्रोग्राम पेश किये जाते हैं, वह कुछ इस तरह हैं :–

लोगों से कलिमा पढ़वा कर अल्लाह जल्ला शानुहू का ज़िक्र किया जाये।

उन्हें मस्जिद में जमा करके अल्लाह की बातें की जायें।

उनको नमाज़ का पाबन्द बनाया जाये और दीगर मुसलमानों में तबलीग करने पर आमाद किया जाये।

ज़ाहिर है कि इन मक़ासिदे हसना से किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं हो सकता, लेकिन :–

"हैं कवाकिब कुछ नज़र आते हैं कुछ" के मिस्दाक़ तबलीग़ी जमाअत का हक़ीक़ी रूप उन्हीं के बुज़ुर्गों के अक़्वाल व अफ़आल की रोशनी मे पेश किया गया है। लेकिन इस हक़ीक़ी रूप के मुताअला से पहले, पढ़ने वाले हज़रात ज़ेल की चन्द मिसालों को पढ़ कर

एक मुसल्लमा ओसूल ज़ेहन नशीन फ़रमायें :–

क्या किसी को यह कह कर धोखा दिया जा सकता है कि आइये साहब मैं आपको धोखा दे रहा हूँ, नहीं, बल्कि धोखा, बाज़ पहले हम दर्दी और मुहब्बत की बात करके, बाद में धोखा देता है।

क्या कभी किसी ने किसी आदमी को यह कह कर ज़हर दिया है कि लीजिये साहब, ज़हर खाकर हमेशा के लिये मीठी नींद सो जाइये नहीं! बल्कि ज़हर देने वाला ज़हर को किसी मीठी चीज़ में छुपा कर देगा।

जब शिकारी किसी परिन्दे को शिकार बनाना चाहता है तो वह उसी की बोली बोलता है, हालांकि शिकारी इंसान होता है, लेकिन वह अपने मक़सद के लिये परिन्दा बन जाता है।

मशहूर मकूला है कि हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और होते हैं। इसी तरह कुछ लोगों के ज़ेहन में प्रोग्राम कुछ और होता है, लेकिन ज़बान से कुछ और बताते हैं।

इस्लाम में नया फ़िरक़ा पैदा करने वाला शख़्स क्या यह कह कर फ़िरक़ा बना सकता है कि आइये मुसलमानो! मैं इस्लाम में नया फ़िरक़ा बना रहा हूँ, आप मेरा साथ दीजिये! नहीं, बल्कि वह शख़्स फ़िरक़ा बन्दी की मुख़ालिफ़त करेगा, लेकिन अन्दर ही अन्दर वह एक नया फ़िरक़ा बनायेगा।

क्या हमारे दुश्मन मुल्क का जासूस आकर हमें यह बता देगा कि मैं जासूसी पर मुतऐयन हूँ, नहीं! बल्कि वह हमारा बनकर, हमारी जड़ें काटेगा।

क्या अहादीसे रसूल के मुनकिर मुसलमानों को अपने साथ मिलाने की दावत देने के वक़्त यह कहेंगे कि वह अहादीसे रसूल के मुनकिर हैं? (हरगिज़ नहीं) बल्कि वह ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की

तरह अपने रिसालों के सफहः अव्वल पर हदीस शाए (छाप) करके फ़रेब देंगे।

क्या कोई शख़्स अपना माल यह कह कर बेचता है कि मेरा माल ख़राब है, हरगिज़ नहीं! बल्कि अपना माल दुनिया के सारे दुकानदारों के माल से अच्छा बतायेगा।

इन रोज़ाना के मुशाहिदात से यह बात साबित हो गई कि अगर कोई जमाअत या फ़र्द अगर बज़ाहिर अच्छी और मीठी बातें करें, और नेक मक़ासिद का इज़हार करे, तो यह ज़रूरी नहीं कि हम बग़ैर सोचे समझे और परखे उसके साथ हो लें, बल्कि हमें पूरी तहक़ीक़ करके यह देख लेना चाहिये कि कहीं वह रहबर के लिबास में रहज़न तो नहीं है। इसी लिये किसी शायर ने ख़ूब कहा है : –

लिबासे ख़िज़्र में यां सैंकड़ों रहज़न भी फिरते हैं!
अगर जीने की ख़्वाहिश है तो कुछ पहचान पैदा कर!!

अब आप तबलीग़ी जमाअत का हक़ीक़ी रूप उन्हीं की किताबों की रोशनी में मुलाहिज़ा फरमाइये। किसी भी मज़हब या तहरीक के मक़ासिद मालूम करने का अहम तरीन ज़रिया उस तहरीक़ के बानी और अकाबिरीन की किताबों से होता है। तबलीग़ी जमाअत के बानी मौलवी इल्यास हैं। उनके अलावा मौलवी यूसुफ़, मौलवी ज़करिया, मौलवी मनज़ूर नौमानी, तबलीग़ी जमाअत के अहम सुतून तसव्वुर किये जाते हैं। तबलीग़ी जमाअत के अकाबिरीन में मौलवी इस्माईल देहलवी, मौलवी अशरफ़ अली थानवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी क़ासिम नानौतवी वग़ैरह शामिल हैं। ख़ुद मौलवी इल्यास लिखते हैं :–

"हज़रत थानवी रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत बड़ा काम किया है। बस मेरा दिल चाहता है कि तालीम तो उनकी हो, और तरीक़ये

तबलीग़ मेरा हो, कि इस तरह उनकी तालीम आम हो जायेगी।"

(मल्फ़ूज़ात मौलाना इल्यास)

इसी तरह दूसरी जगह मौलवी इल्यास लिखते हैं कि :-

"हज़रत गंगोही (रशीद अहमद गंगोही) इस दौर के क़ुतुबे इरशाद और मुजद्दिद थे।" (मल्फ़ूज़ाते इल्यास)

"यही रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि मौलवी इस्माईल देहलवी की किताब 'तक़्वियतुल-ईमान' हर घर में रखना ऐन इस्लाम है।" **(फ़तावा रशीदियां)**

मौलवी क़ासिम नानौतवी के बारे में सिर्फ़ इस क़दर लिखना काफ़ी है कि वह मदरस-ए-देवबन्दी के बानी हैं। जहां से बर्रे सग़ीर के मुसलमानों के कुलूब से इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जज़्बा ख़त्म करने की तहरीक शुरू हुई।

यह तो थे तबलीग़ी जमाअत के अकाबिर। लेकिन हो सकता है कि कोई शख़्स इन हज़रात को अकाबिर मानने से इनकार कर दे। इसलिये कि इन हज़रात ने अपनी किताबों में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ियां की हैं। लेकिन इस इनकार से कुछ हासिल नहीं हो सकता। इसलिये अव्वल तो ख़ुद मौलवी इल्यास बानी तबलीग़ी जमाअत के मरकज़ी इज्तमा गाह के बाहर लगाये जाने वाले बुक स्टॉलों से उन अकाबेरीन तबलीग़ी जमाअत की किताबें फ़रोख़्त की जातीं हैं। क़ब्ल इसके कि तबलीग़ी जमाअत के इन अकाबेरीन की तालीमात का अस्ल नक़्शा हदीया-ए-क़ारेईन किया जाये, एक और वज़ाहत यह करनी है कि अगर सहीहुल-अक़ीदा सुन्नी से पूछा जाये कि आप अपने अकाबेरीन के नाम बताइये तो वह फ़ौरन हज़रते इमाम हुसैन, हज़रत इमाम हसन, इमाम अबू हनीफ़ा, हज़रत ग़ौसे आज़म, हज़रत ख़्वाजा

अजमेरी, हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी और हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ी अल्लाहु अन्हुम अजमईन का नाम गिनवा देगा। लेकिन चूंकि तबलीग़ी जमाअत की किताबें रसूले अकरम की शान में गुस्ताख़ियों से भरी पड़ी हैं, इसलिये वह अपने अकाबेरीन का नाम बताने में शर्म महसूस करते हैं। ख़ैर यह तो अपनी-अपनी क़िस्मत की बात है। अब आइये अकाबेरीन तबलीग़ी जमाअत की किताबों से उनकी तालीमात मुलाहिज़ा फरमाइये।

मौलवी इस्माईल देहलवी की तालीमात

नमाज़ में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ ख़्याल ले जाना अपने गदहे और बैल के ख़्याल में डूब जाने से बदरजहा बेहतर है। **(सिराते मुस्तक़ीम)**

हर मख़्लूक़ बड़ा हो या छोटा अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा जलील है। **(तक़्वियतुल-ईमान)**

हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं भी मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूँ। **(तक़्वियतुल-ईमान)**

जिसका नाम मुहम्मद या अली है, वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। **(तक़्वियतुल-ईमान)**

हुज़ूर की ताजीम बड़े भाई के बराबर करना चाहिये, क्योंकि आप भी इंसान हैं। **(तक़्वियतुल-ईमान)**

रौज़ये मुतह्हरा का फ़क़त ज़ियारत के लिए सफर करना शिर्क है। **(तक़्वियतुल-ईमान)**

अम्बिया की ताजीम बशर की सी करो, सो उसमें भी कमी करो। **(तक़्वियतुल-ईमान)**

मौलवी क़ासिम नानौतवी की तालीमात

अम्बिया अपनी उम्मत में अगर मुमताज़ होते हैं, तो उलूम ही में

मुमताज़ होते हैं। बाक़ी रहा अमल तो इसमें बसा औक़ात बज़ाहिर उम्मती मसावी (बराबर) हो जाते हैं। (तहज़ीरुन्नास)

अवाम के ख़्याल में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ातिम होना बायीं माने है कि आपका ज़माना अम्बियाये साबेक़ीन के ज़माने के बाद, और आप सब में आख़िरी नबी हैं। मगर अहले फ़हेम पर यह रौशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्ख़ुर जमानी में बिज़्ज़ात कुछ फज़ीलत नहीं, फिर मक़ामे मदह **"वला किर रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबीयीन"** फरमाना इस सूरत में क्यों कर सही हो सकता है? मगर बिल फ़र्ज़ बाद ज़माना नबवी कोई और नबी आ भी जाये तो उससे ख़ातमीयते मोहम्मदी में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। **(तहज़ीरुन्नास)**

मौलवी क़ासिम नानौतवी की इस इबारत को क़ादियानी भी बतौर हवाला पेश करते हैं कि अगर बिल फ़र्ज़ किसी नबी के आने से ख़ातमीयते मुहम्मदी में फ़र्क़ नहीं पड़ता, तो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के आने से क्या फ़र्क़ पड़ेगा? मौलवी क़ासिम नानौतवी की इन इबारतों से मौलवी इल्यास की किस क़दर हौसला अफ़्ज़ाई हुई। उसको आइन्दा सफ़्हात पर मुलाहिज़ा फ़रमाइयेगा।

मौलवी रशीद अहमद गंगोही की तालीमात

लफ़्ज़ '**रहमतुल्लिल आलमीन**' सिफ़त ख़ासये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं है। (फ़तावा रशीदिया जिल्द-२)

यानी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अलावा भी किसी को '**रहमतुल्लिल-आलमीन**' लिखा जा सकता है। नऊज़ु बिल्लाह।

(फ़तावा रशीदिया, जिल्द-२)

(इनएक़ाद मजालिसे मौलूद (मिलाद शरीफ़) हर हाल में नाजायज़ है)

वह शख़्स जो सहाब-ए-किराम ही की तकफ़ीर करे (काफ़िर करार दें) वह मल्ऊन है। ऐसे शख़्स को इमामे मस्जिद बनाना हराम है और वह अपने इस कबीरा के सबब सुन्नत जमाअत से ख़ारिज न होगा। **(फ़तावा रशीदिया)**

नोट :– हालांकि अगर कोई मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को काफ़िर कहे, तो वह ख़ुद काफ़िर हो जाता है। लेकिंन अफ़सोस कि मौलवी साहब सहाब-ए-किराम को काफ़िर कहने वाले को सुन्नत जमाअत से ख़ारिज भी नहीं करते।

सुन लो! हक़ वही है, जो रशीद अहमद की ज़ुबान से निकालता हे, और बक़सम कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं हूँ, मगर इस ज़माने में हिदायत व निजात मौकूफ़ है मेरी इत्तेबा (पैरवी) पर। **(तज़किरतुर्रशीद जिल्द-२)**

यह दावा है, जो सिर्फ़ नबीये करीम करते रहे हैं। लेकिन रशीद अहमद गंगोही अपने मुतअल्लिक़ यह दावा कर रहे हैं, क्यों? यह फ़ैसला क़ारेईन (पढ़ने वाले) ख़ुद फ़रमायें।

मुहर्रम में ज़िक्र शहादते हुसैन रज़ी अल्लाहु अन्हु करना अगर वह रिवायते सहीहा हो, सबील लगाना, शरबत पिलाना, चन्दा सबील व शरबत में देना, या दूध पिलाना, सब ना दुरुस्त और तशब्बोह रवाफ़िज़ की वजह से हराम है। (फ़तावा रशीदिया)

लेकिन इसके बर-अक्स इसी फ़तावा रशीदिया में मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने लिखा है कि हिन्दू जो प्याऊ लगाते हैं, उसका पानी पीना जायज़ है।

बज़रिये मनी आर्डर रुपया भेजना ना दुरुस्त और दाखिले रेबा (सूद) है। **(फ़तावा रशीदिया)**

हालांकि इन मौलवी साहब के घर नज़राने के तौर पर

बतौर अतीया कुछ रक़म रवाना की जाये, तो बसर व चश्म कुबूल कर लेंगे।

ईदैन में मोआन का (गले मिलना) करना बिदअत है।

(फ़तावा रशीदिया)

अहादीस की रौशनी में बिदअती की सज़ा जहन्नम है। अगर मौलवी साहब का फ़तवा सही मान लिया जाये, तो ईद तो क्या हुई, मुसलमान के लिये मुसीबत हो गयी। हर साल लाखों, करोड़ों मुसलमान जहन्नमी बन जायें। ख़ुद तबलीग़ी जमाअत वाले भी ईद के रोज़ गले मिलने से उनके सारे तबलीग़ी गश्तों का सवाब चला जाता है। और बक़ौल मौलवी गंगोही वह जहन्नम के मुस्तहिक़ क़रार पाते हैं।

मौलवी अशरफ़ अली थानवी की तालीमात

यह बात तो हर ख़ास व आम जानते हैं कि मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने अपनी किताब "**हिफ़्ज़ुल ईमान**" में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्मे ग़ैब को जानवरों, पागलों के इल्म से तशबीह दी थी। जिस पर सुन्नी उलमा-ए-हिजाज व हिन्द (व पाक) ने उन पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया। मौलवी अशरफ़ अली थानवी की तालीमात के कुछ और हवाले भी पेशे ख़िदमत हैं, जिनको फ़ैलाने के लिए मौलवी इल्यास ने तबलीग़ी जमाअत बनाई थी।

एक मरतबा किसी मुरीद ने मौलवी (थानवी) साहब को लिखा कि :-

मैंने ख़्वाब में अपने आपको देखा कि ला इलाहा इल्लल्लाह के बाद अशरफ़ अली रसूलुल्लाह मुँह से निकल जाता है। जब बेदार होकर कोशिश करता हूँ कि सही कलिमा और सही दरूद पढ़ूँ।

लेकिन ज़ुबान क़ाबू में नहीं है। हर जगह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बजाये अशरफ़ अली रसूलुल्लाह निकलता है।

मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने इसके जवाब में लिखा है कि "इस वाक़ये में तसल्ली है, इसलिये कि मैं सुन्नत की इत्तेबा करता हूँ।" (रिसाला अल इमदाद, माह सफ़र, १३३६ हिज़री, बुरहान फ़रवरी १९५२)

मुलाहिज़ा फ़रमाया आपने। लिखना तो यह चाहिये था कि जल्दी तौबा करो और सही कलिमा पढ़ो, वरना मुसलमान नहीं रहोगे, लेकिन चूंकि दारुल-उलूम देवबन्द के बानी मौलवी क़ासिम नानौतवी ने दरवाज़ये नबुव्वत खोल रखा है, इसलिये यहाँ तो हर शख़्स मुद्दये नुवुव्वत है। अगर यही वाक़्या मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी से मनसूब करके किसी तबलीग़ी जमाअत के फ़र्द को सुनाया जाये तो वह बरमला कहेगा कि यह कुफ़्र है और उसका कहना भी सही है। लेकिन अगर उसे यह बताया जाये कि यह मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने लिखा है, तो वह टाल-मटोल से काम लेगा। लानत है! ऐसी अन्धी अक़ीदतमन्दी पर।

अपनी किताब 'क़सदुस्सबील' में मौलवी अशरफ़ अली थानवी मुन्दरजा ज़ेल उमूर को नाजायज़ क़रार देते रहे हैं और अवाम को इससे बचने की तलक़ीन कर रहे हैं। ज़रा इस फ़िहरिस्त को मुलाहिज़ा फरमाइये और सोचिये कि दुनिया के तमाम मुसलमानों और तबलीग़ी जमाअत के अकाबेरीन के अक़ीदे में कितना फ़र्क़ है :–

मुर्दे का तीजा, दसवां, बीसवां और चालीसवां करना, उर्स में जाना, बुज़ुर्गों की मिन्नत मानना, फ़ातिहा, नियाज, ग्यारहवीं शरीफ़ वग़ैरह मुतआरिफ़ तौर पर करना, रिवाज़ के मुवाफ़िक़ मौलूद शरीफ़

करना, तबर्रुकात की ज़ियारत के लिये उर्स का इन्तिज़ाम करना, शबे बरात का हलवा पकाना, रमज़ान शरीफ़ में ख़त्म कुरआन के मौके पर शीरनी ज़रूर करके बांटना यह सब नाजाइज़, बिदअत व हराम है। **(क़सदुस्सबील)**

तबलीग़ी जमाअत से सादगी के सबब मुतअल्लिक़ होने वाले अफ़राद बतायेंगे कि अगर वह मौलवी इल्यास की ख़्वाहिश के मुताबिक़ थानवी जी की तालीमात को आम करेंगे तो मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ पैदा होगा कि नहीं? और इसका ज़िम्मेदार कौन होगा? जब दुनिया के मुसलमानों की अकसरीयत सदियों से इन कामों को नेक समझ रही है, तो फिर तबलीग़ी जमाअत के अकाबिर कौन होते हैं, इन कामों को नाजाइज़ बताने वाले। पढ़ने वाले हज़रात ख़ुद ही इन्साफ़ करें कि अगर शबे बरात को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पसन्दीदा ग़िज़ा हलवा पकाया जाये, ख़ुद भी खाया जाये और फुक़रा व मसाकीन को भी खिलाया जाये तो उसमें क्या क़बाहत है। इसी तरह अगर मुर्दे को सवाब पहुँचाने के लिए किसी दिन भी फ़ातिहा कराई जाये, तो इसमें कौन सा शिर्क है। और फिर हैरत की बात यह है कि इन्हीं थानवी साहब के अज़ीज़ मौलवी एहतशामुल–हक़ थानवी सिर्फ़ सरमायादारों में अपनी पोज़ीशन ख़राब होने से बचाने के लिये यह सारे नाजाइज़ काम करते हैं। हालांकि कोई भी ग़ैरतमन्द मुसलमान अगर किसी चीज़ को नाजाइज़ समझता है, तो उससे दूर रहता है। हत्ता कि अगर बेग़ैरत हो तो भी छुप कर नाजायज़ काम करता है। लेकिन मौलवी एहतशामुल-हक़ थानवी किसी भी बाअर शख़्स के मरते ही सारे नाजाइज़ काम कुछ इस तरकीब से करते हैं कि दूसरे दिन अख़बारात में तस्वीरें भी आ जाती हैं।

जब अशरफ़ अली थानवी कानपुर के मदरसा जामे-उल-उलूम में पढ़ाया करते थे, तो एक दिन उन्होंने अह्ले मुसल्ला से साफ़-साफ़ कह दिया कि भाई। यहाँ वहाबी रहते हैं, यहाँ फ़ातिहा के लिये कुछ मत लाया करो। (अशरफुस्सवानेह, जिल्द अव्वल)

है कोई तबलीग़ी जमाअत वाला जो इस हवाले के बाद भी कह दे कि हम वहाबी नहीं हैं। इसी सिलसिले में मौलवी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा भी मौजूद है कि "मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब" के मुक़्तदियों को वहाबी कहते हैं। उनके अक़ाइद निहायत उम्दा थे।"

(फ़तावा रशीदिया, जिल्द अव्वल)

लगे हाथों मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब का एक ही अक़ीदा उनकी ही ज़ुबानी सुन लीजिये।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक़बरे का देखना ऐसा गुनाह हैं जैसे बुतों का देखना। **(किताबुत्तौहीद)**

यह तो है तबलीग़ी जमाअत के अराकीन के अक़ाइद। जब यह हज़रात इन अक़ाइद को आम करने के लिए गली कूचों में निकलते हैं तो नतीजा क्या निकलता है। उसको एक मिसाल से समझ लीजिये।

एक साहब नमाज़े जुमा के बाद बारगाहे रिसालत में हदिय-ए-दरूद व सलाम पेश कर रहे थे, तबलीग़ी जमाअत के एक साहब उन्हें सलाम पढ़ने से मना करते हुए कहा कि मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने बहिश्ती ज़ेवर में सलाम पढ़ने को शिर्क लिखा है। बस इस बात पर हंगामा हो गया। लोगों ने तबलीग़ी जमाअत वालों से कहा कि आप ख़ुद नहीं पढ़ना चाहते हैं तो न पढ़ें, लेकिन इतनी रवादारी का मुज़ाहिरा तो करें ही कि जो पढ़ना चाहे उसे पढ़ने दें। अब पढ़ने वाले हज़रात ग़ौर फ़रमायें कि अगर तबलीग़ी जमाअत

वाले पढ़ने से मना न करते तो यह इंतेशार बरपा होता? अगर पूरी दियानतदारी से जायज़ा लिया जाये तो यह साबित हो जायेगा कि तबलीग़ी जमाअत के अक़ाइद ही ऐसे हैं जिनकी इशाअत ही मुजिबे इन्तेशार है।

अब आइये, मैं आपके सामने तबलीग़ी जमाअत की तज़ाद बेइमानियों और ऊट-पटांग दावों की चन्द मिसालें पेश करूं, ताकि उनकी सही तस्वीर उभर कर सामने आ जाये।

किसी भी तबलीग़ी जमाअत वाले से पूछिये कि यह तरीक़ये तबलीग़ जो आपने अख़्तियार किया है वह किसका है? फ़ौरन जवाब मिलेगा कि यह तरीक़ये तबलीग़ सहाब-ए-किराम का है, लेकिन मौलवी इल्यास की भी सुनिये। आपने (मौलवी इल्यास ने) फ़रमाया :—

"इस तबलीग़ का तरीक़ा भी मुझ पर ख़्वाब में मुन्कशिफ़ हुआ।" **(मल्फ़ूज़ाते इल्यास)**

मौलवी इल्यास लिखते हैं कि हक़ तआला अगर किसी से काम को नहीं लेना चाहते, तो चाहे अम्बिया भी कितनी कोशिश कर लें, तब भी ज़र्रा नहीं हिल सकता और करा लेना चाहे तो तुम जैसे ज़ईफ़ से भी वह काम ले लें, जो अम्बिया से भी न हो सके। **(मकातीबे इल्यास)**

अल अमान वल हफ़ीज़। कारकुनों में गुस्ताख़िये रसूल का कैसा मकरूह जज़्बा पैदा किया जा रहा है। और यह कोई इत्तेफ़ाक़ी जुमला नहीं है। मौलवी इल्यास के शैखुल इस्लाम मौलवी हुसैन अहमद मदनी (अजोध्यावासी) ने भी यही बात कही है।

"पैग़म्बर को अमल की वजह से फ़ज़ीलत नहीं। अमल में तो बाज़ उम्मती पैग़म्बर से भी बढ़ जाते हैं।" (रिसाला मदीना, बिजनौर, जुलाई १९५८)

इसी सिलसिले के दो और हवाले मुलाहिज़ा फ़रमायें, ताकि आपको यह मालूम हो सके कि तबलीग़ी जमाअत के अफ़राद मौलवी इल्यास को नबी का दरजा देते हैं या इससे कुछ कम।

आपने (मौलवी इल्यास ने) फ़रमाया कि अल्लाह का इरशाद है "**कुनतुम खै़रा उम्मतिन उख़रिजत लिन्नासि तअमुरूना बिल मारूफ़ि व तनहौना अनिल मुनकरे**।" कि तफ़्सीर ख़्वाब में अल्क़ा हुई कि तुम मिस्ले अम्बिया के लोगों के वास्ते ज़ाहिर किये गये हो।"

(मल्फ़ूज़ाते इल्यास)

एक बार फ़रमाया (मौलवी इल्यास) ने कि ख़्वाब नुबुव्वत का छियालिस्वां हिस्सा है। बाज़ को ख़्वाब में ऐसी तरक़्क़ी होती है कि रियाज़त व मुजाहदे से नहीं होती, क्योंकि उनको ख़्वाब में उलूमे सहीहा अल्क़ा होते हैं, जो नुबुव्वत का हिस्सा है, फिर तरक़्क़ी क्यों न हो, इल्म से मारिफ़त बढ़ती है और मारिफ़त से क़ुर्ब बढ़ता हैं इसीलिये इरशाद है "**कुल रब्बे ज़िदनी इल्मा**।" फिर फ़रमाया आजकल ख़्वाब में मुझ पर उलूमे सहीहा (सही) का अल्क़ा होता है, इसलिये कोशिश करो कि मुझे नींद ज़्यादा आये।

(मल्फ़ूज़ाते इल्यास)

बात दरअस्ल यह है कि ईसाईयों ने मुसलमानों को सल्बी जंगों के ज़रिये ख़त्म करने की कोशिश की, लेकिन जब वह नाकाम रहा तो उसने मन्सूबा बनाया कि मुसलमानों से मुक़ाबला करने की सूरत में सिर्फ़ यही है कि मुसलमानों से जज़्ब-ए-जिहाद और जज़्ब-ए-इश्क़े रसूल ख़त्म कर दिया जाये।

ज़ाहिर है कि अंग्रेज़ बराहे रास्त मुसलमानों से इन जज़्बों को ख़त्म करने की अपील नहीं कर सकता था। इसलिये इसने जहाँ मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी और परवेज़ को इस्तेमाल किया वहीं

कुछ और लोगों को भी उसने अपना आला-ए-कार बनाया, और वह कौन लोग थे? उनकी निशानदेही हम ख़ुद नहीं करते, बल्कि बिला तब्सेरा कुछ हवाले पेश करते हैं ताकि क़ारेईन ख़ुद फ़ैसला करे कि अंग्रेज़ ने किसको आला-ए-कार बनाया। मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं :–

"बाज़ के सरों पर मौत खेल रही थी उन्होंने कम्पनी (अंग्रेज़) के आफ़ियत के ज़माने को क़दर की निगाह से देखा और रहमदिल गवर्नमेंट के सामने बग़ावत का आलम क़ायम किया।"

(तज़्किरतुर्रशीद)

यही रशीद अहमद गंगोही जिनको बानी-ए-तबलीग़ी जमाअत कुतुबे इरशाद या मुजद्दिद कहते हैं, एक और जगह लिखते हैं कि :–

"जब मैं हक़ीक़त में सरकार (ब्रिटिश गवर्नमेंट) का फ़रमा बरदार हूँ तो इन झूठों से मेरा बाल भी बाका न होगा। और अगर मारा भी गया तो सरकार मालिक है, उसे इख़्तियार है जो चाहे करे।"

(तज़्किरतुर्रशीद)

मौलवी शब्बीर अहमद उस्मानी लिखते हैं कि "देखिये! मौलवी अशरफ़ अली थानवी हमारे और आपके मोसल्लम बुज़ुर्ग और पेशवा हैं। उनके मुतअल्लिक़ बाज़ लोगों को यह कहते हुए सुना गया कि उनको छः सौ (**600/-**) रुपया माहवार हुकूमत (अंग्रेज़) की जानिब से दिये जाते थे।"

(मकालमतुस्सदरैन)

मौलवी थानवी के भाई महकमये सी० आई० डी० में बड़े ओहदेदार आख़िर तक रहे उनका नाम मज़हर अली था।

(मक्तूबाते शैख़, जिल्द-२)

"मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान सिवहारवी नाज़िमे जमीयतुल उलमा-ए-हिन्द ने कहा कि इल्यास साहब की तबलीग़ी हरकत को इब्तिदा में

हुकूमत (अंग्रेज़) की जानिब से बजरिये हाजी रशीद अहमद से कुछ रुपया मिलता था।" **(मकालतुस्सदरैन)**

क़ारेईन ख़ुद फ़ैसला फरमा लें, कि अंग्रेज़ का एजेन्ट कौन था? हम सिर्फ़ इतना अर्ज़ करेंगे कि जब अल्लाह व उसके रसूल ने फ़रमाया कि इसाई तुम्हारे ख़ैर ख़्वाह नहीं हो सकते। तो किसी भी मौलवी साहब के कहने पर हम अंग्रेज़ को मुसलमान का ख़ैर ख़्वाह या रहम दिल नहीं कह सकते। रहा यह सवाल कि वह अपने एजेन्टों के हक़ में रहम दिल था या नहीं तो इसका फ़ैसला एजेन्टों ने अपनी किताबों में कर दिया है। अंग्रेज़ को भला क्या ज़रूरत है कि वह तबलीग़े इस्लाम कि लिये फण्ड दें। उसने तो उल्टा मुजाहिदीने इस्लाम को ज़ुल्म व सितम का निशाना बनाया। अल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी, मौलवी फ़ज़्ल रसूल बदायूनी, मौलाना लुत्फ़ुल्लाह अलीगढ़ी, मुफ़्ती इनायत अहमद काकोरवी, मौलाना अहमदुल्लाह मदरसी, मुफ़्ती अब्दुल–करीम दरिया बादी (रहमतुल्लाह अलैहिम अजमईन) यह सारे अंग्रेज़ों की जारेहीयत, सफ़्फ़ाक़ी और दरिन्दगी के निशाना बन चुके हैं।

यह तो ख़ैर वाज़ेह हक़ीक़त है कि अंग्रेज़ इस्लाम के लिये फ़ण्ड फ़राहम नहीं कर सकता। लेकिन सवाल यह है कि क्या मौलवी इल्यास का मक़सद भी तबलीग़ था? हम ख़ुद अगर इस पर राय ज़नी करें तो बात जानिबदाराना कहलायेगी, इसलिये इस मसले पर इल्यास साहब ही रौशनी डालें तो बेहतर होगा। चलिये उन्हीं की ही राय सुन लीजिये, कहते हैं कि :–

"ज़हीरुल हसन मेरा मुद्दोआ कोई पाता नहीं, लोग समझतें हैं कि यह (तबलीग़ी जमाअत) तहरीके सलात है। मैं क़सम से कहता हूँ कि यह हरगिज़ तहरीक़े सलात (नमाज़) नहीं है। बड़े हसरत से

फ़रमाया कि मियां ज़हीरुल-हसन! एक नई क़ौम पैदा करनी है।"

(दीनी दावत)

क्यों पैदा करनी है? क्या अंग्रेज़ इसी ग़रज़ से माली इआनत (मदद) नहीं करता था?

अब तक हम ने जो कुछ लिखा है उसको तस्दीक़ के लिये हम तबलीग़ी जमाअत के घर के भेदी की शहादत पेश करते हैं। ताकि भोले-भाले मुसलमानों को यह कहकर टाला न जा सके कि लिखने वाले तबलीग़ी जमाअत के दुश्मन हैं, उनका काम ही मुख़ालिफ़त करना है।

मौलवी अब्दुर्रहीम शाह साहब जो कि काफ़ी अर्से से तबलीग़ी जमाअत का काम कर रहे थे, जब उन्होंने देखा कि तबलीग़ी जमाअत वाले उलमा की क़दर नहीं करते और ख़ुद जाहिल होने के बावजूद दर्स देने लगते हैं तो उन्होंने तबलीग़ी जमाअत से किनारा कशी इख़्तियार कर ली और एक किताब बनाम "उसूले दावत व तबलीग़" लिखी, जिसमें साफ़-साफ़ लिखा कि :–

"ग़ौर का मक़ाम है कि कोई शख़्स बग़ैर सनद के कम्पाउन्डर तक नहीं बन सकता, मगर लोगों (तबलीग़ी जमाअत वालों ने) दीन को इतना आसान बना दिया है कि जिसका जो चाहे वाअज़ व तक़रीर करने खड़ा हो जाये। किसी सनद की ज़रूरत नहीं। ऐसे ही मौक़े पर यह मिसाल ख़ूब सादिक़ आती है कि "नीम हकीम ख़तरे जान, नीम मुल्ला ख़तरये ईमान।" **(उसूले दावत व तबलीग़)**

आख़िर में एक ग़लत फ़हमी का एज़ाला और कर दूँ कि बाज़ सीधे-सीधे मुसलमान इस उलझन का शिकार हुये हैं कि तबलीग़ी जमाअत वाले बड़े पक्के नमाज़ी हैं। उन्हें कैसे गुमराह क़रार दिया जाये। इसका जवाब उन्हीं के अशरफ़ अली थानवी की ज़बानी

सुनिये, जिनकी तालीम को आम करने के लिये, मौलवी इल्यास ने तबलीग़ी जमाअत बनाई। लीजिये जवाब हाज़िर है।

"जब मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने शिबली नौमानी को काफ़िर क़रार दिया तो मौलवी अब्दुल माजिद दरियाबादी ने अशरफ़ अली को ख़त लिखा कि "शिबली तो बड़े नमाज़ी परहेज़गार और तहज्जुद गुज़ार हैं।" इस पर अशरफ़ अली थानवी ने जवाब दिया कि – "बद-दीन आदमी अगर दीन की बातें भी करता है तो उसमें ज़ुलमत लिपटी हुई होती है।" **(कमालाते अशरफ़ीया)**

क़ादियानी भी दावा करते हैं कि दुनिया भर में सबसे ज़्यादा तबलीग़ हम करते हैं, लेकिन उनके अक़ाइद के बिना पर उनको दुनिया के सारे मुसलमान काफिर क़रार देते हैं।

तबलीग़ी जमाअत का हक़ीक़ी रूप बिल्कुल बे-नक़ाब होकर आपके सामने आ चुका है। अब आप से हमारी दरख़्वास्त है कि आप फ़ैसला करें कि हक़ पर कौन है?

रोज़ महशर कोई किसी के काम न आयेगा। वहाँ तो हर उम्मती नफ़्सी-नफ़्सी पुकारता हुआ, बारगाहे रिसालत मआब में पहुँचेगा।

तबलीग़ी जमाअत वाले या सादगी से उनके दाम में फंसने वाले भोले-भाले सोच लें कि आज अगर उन्होंने इस जमाअत का साथ दिया जिसके अकाबेरीन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ियां की हैं, तो कल मैदाने महशर में कमली वाले आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने क्या मुँह लेकर जायेंगे? लेकिन हां! अभी तो तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है, बेहतरी इसी में है कि गुस्ताख़ाने रसूल के गिरोह से निकल कर गुलामाने रसूल की सफ़ में शामिल हो जाया जाये।

आज ले उनकी पनाह, आज मदद मांग उनसे!
फिर ना मानेंगे क़्यामत मे, अगर मान गया!!

नोट :– यहाँ तक का मज़मून मौलाना शाह तुराबुल हक़ साहब का है और उसके आगे का मज़मून इदारा-ए-शरईया, सुलतानगंज, पटना नम्बर-६; से शाया करदा पोस्टर से माख़ूज़ हैं।

मुसलमानों को तबलीग़ी जमाअत से क्यों अलग रहना चाहिये? एक बुनियादी सवाल

कोई भी ग़ैरतमन्द इंसान किसी ऐसी तहरीक़ को हरगिज़ क़ुबूल नहीं कर सकता, जिससे ईमान व अक़ीदे के जज़्बे को ठेस पहुँचती हो। वे अमल रहना यक़ीनन बदनसीबी की बात है, लेकिन अमल के नाम पर बद-अक़ीदा बनकर आख़िरत का इतना बड़ा नुक़सान है जिसकी तलाफ़ी ना मुम्किन है।

ज़ैल में तबलीग़ी जमाअत के मोतबर किताबों के हवाले से यह साबित किया गया है कि वह दीन के नाम पर मुसलमानों को बेदीन बनाने वाली एक निहायत चालाक जमाअत है। कलिमा और नमाज़ के नाम पर मुसलमानों को अपने रसूल की तरफ़ से बद-अक़ीदा बनाना और औलिया अल्लाह की अज़मत घटाना और मज़हबे अह्ले सुन्नत को मिटा कर दुनिया में वहाबीयत फ़ैलाना, तबलीग़ी जमाअत का बुनियादी नस्बुल ऐन है। चिल्ला, गश्त और चलत-फिरत का तरीक़ा उन्होंने इसी लिये निकाला है कि हक़ परस्त मुसलमानों का ज़ेहन तब्दील करने के लिये, सफर की हालत में उन्हें तन्हाई और एतमाद के लम्हे मयस्सर आ सकें।

हम अपने दीनी भाईयों से ईमान की सलामती की ख़्वाहिश की बुनियादों पर मुख़्लेसाना इल्तेमास करते हैं कि वह तबलीग़ी ज़माअत की आवाज़ पर क़दम उठाने से पहले एक बार इंसाफ़ की नज़र से

हमारी इस तहरीर का मुताअला फरमा लें, जिससे तबलीग़ी जमाअत से अलग रहने की माकूल वजूहात ब्यान की गईं हैं। हो सकता है कि हमारी बात आपके दिल में उतर जायें और मज़हबे अह्ले सुन्नत के ख़िलाफ़ आप वक़्त के सबसे बड़े फ़ितने से होशियार हो जायें। तबलीग़ी जमाअत की इस धोंस में हरगिज़ ना आईयेगा कि उसके साथ बड़े-बड़े इन्जीनियर डॉक्टर, प्रोफ़ेसर और लखपती व करोड़पती ताजिर हैं।

हमारा दावा तो यह है कि तबलीग़ी जमाअत के साथ नज्द के बादशाह अमीर फ़ैसल (व उनके जानशीन वग़ैरह) हैं। पूरी नजदी हुकूमत है, और नज्द के रेयाल पर उनका सारा कारोबार चल रहा है। ताकि जिस तरह नज्दी क़ौम ने मक्के और मदीने में बड़े-बड़े सहाबा और अहले बैत के मज़ारात और रसूले पाक की यादगार में बनाई हुई मस्जिदों तोड़ कर खन्डहर बना दिया है।

हिन्दुस्तान में भी ख़्वाजा और साबिर, महबूब और मख़्दूम, शहीद और कुतुब के मज़ारों के साथ•वहीं खेल खेला जाये, और इस तरह शैतान की वह साज़िश कामयाब हो जाये कि रूए ज़मीन पर ख़ुदा के महबूब बन्दों की कोई निशानी बाक़ी न रहे।

एक अज़ीम ख़ुशख़बरी

ज़ैल के मजमून में जितने हवाले दिये गये हैं वह सब तबलीगी जमाअत से अख़ज़ किये गये हैं। एक भी ग़लत साबित करने पर एक हज़ार (**1000**) रुपये नक़द का एलान किया जाता है।

(इदारा)

तबलीग़ी जमाअत की तहरीक कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ है मौलाना इल्यास के ख़लीफ़ा व मोतमद मौलाना एहतेशामुल हसन साहब का ऐलान

तबलीग़ी जमाअत के सिलसिले में हमारी यह राय शायद किसी ग़लत जज़्बे पर मबनी समझी जाये, लेकिन इसे क्या कहियेगा कि मौलाना ऐहतशामुल हसन जो मौलवी इल्यास के बरादरे निस्बती और उनके ख़लीफ़ा-ए-अव्वल और उनके मोतमदे ख़ुसूसी हैं, ख़ुद उनका ब्यान है :–

"निजामुद्दीन की मौजूदा तबलीग़ मेरे इल्म व फ़हम के मुताबिक़ न कुरआन व हदीस के मुताबिक़ है और न हज़रत मुजद्दिदे अलिफ़ सानी और हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी और उलमा-ए-हक़ के मसलक के मुताबिक़ है।

(उसूले दावत व तबलीग़ का आख़िरी टाइटिल पेज)

अब आप ही इंसाफ व ईमान को दरम्यान में रख कर फ़ैसला कीजिये कि जब बस्ती निज़ामुद्दीन की मौजूदा तबलीग़ कुरआन व हदीस के भी ख़िलाफ़ है, उलमा-ए-हक़ के मसलक के भी ख़िलाफ़ है तो इतनी दिलेरी के साथ मुसलमानों को एक गुनाह की दावत क्यों दी जा रही है। आख़िर एक ग़ैर इस्लामी फ़ेअल के लिये........ .क्यों इनका क़ीमती वक़्त उनके पसीने की कमाई और उनकी सलाहियतों का दिन दहाड़े ख़ून किया जा रहा है।

मौसूफ़ का ऐतराफ़

कि मौजूदा तबलीगी तहरीक़ एक बिदअत व गुमराही है। इसके बाद लिखते हैं :–

"मेरी अक़्ल व फ़हम से बहुत बाला है कि जो काम हज़रत मौलाना इल्यास साहब की हयात में वसूलों की इन्तेहाई पाबन्दी के बावजूद सिर्फ़ बिदअते हसना की हैसियत रखता था। उसको अब इन्तेहाई बे वसूलियों के बाद दीन का एक अहम काम किस तरह क़रार दिया जा रहा है। अब तो मुनकरात की समूलियत के बाद बिदअते हसना भी नहीं कहा जा सकता।"

(उसूले दावत व तबलीग़ का आख़िरी टाइटिल पेज)

इस ब्यान में तो मौसूफ़ ने तबलीग़ी जमाअत की बिसात ही उलट कर रख दी है। जब मौलाना इल्यास ही की ज़िन्दगी में यह बात तय पा गई है कि तबलीग़ी जमाअत की मौजूदा तहरीक सुन्नत नहीं बिदअत है, तो मुसलमानों को इतने अर्से तक क्यों धोखे में रखा गया कि यह अम्बिया का तरीक़ा है, यह सहाबा की सुन्नत है, अब इसका हाल यह है कि यह बिदअते हसना भी नहीं रही, बल्कि बिदअते जलालत के खाने में चली गई, जिसके मुरतकिब को हदीस में जहन्नम की बशारत दी गई है। यह फ़ैसला हमारे घर का नहीं है, बल्कि तबलीग़ी जमाअत के उन पुराने रहनुमाओं का है जो तबलीग़ी जमाअत के गुमराहियों से बेज़ार होकर अलग हो गये हैं।

अब इंसाफ़ व दियानत का तक़ाज़ा यह है कि तबलीग़ी जमाअत के मौजूदा क़ायेदीन या तो मौलाना ऐहतशामुल हसन के इन इल्ज़ामात की सफ़ाई पेश करें या फिर सादा लौह मुसलमानों को एक गुनाह की तरफ दावत देने का यह सिलसिला बन्द करें।

मेवात में तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब

मौलवी अब्दुर्रहीम शाह देवबन्दी जो तबलीग़ी जमाअत के पुराने कारकुन हैं, उन्होंने अपनी किताब 'उसूले दावत व तबलीग़' में इन्केशाफ़ किया है कि आजकल मेवात में तबलीग़ी जमाअत के लोग

कलिमा व नमाज़ की तबलीग़ के बजाये मुसलमानों को काफ़िर व मुरतद बनाने की मुहिम में मस्रूफ़ हैं। जैसा कि मौसूफ़ के अल्फ़ाज़ यह हैं :–

"हमारे मेवात वाले माशा अल्लाह अरब व अजम में मुसलमान बनाते-बनाते उक्ता गये हैं, जी भर गया, इसलिये मेवात के बाज सरगरम मुबल्लेग़ीन व उलमा ने मुसलमानों को काफ़िर व मुरतद बनाना शुरू कर दिया है।"

(उसूले दावत व तबलीग़, सफ़ा-६१, मतबूआ अलजमीयत प्रेस दिल्ली)

इसी किताब में दूसरी जगह फरमाते हैं :–

"मैं हैरान हूँ क्या कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता पता नहीं कब से तबलीग़ी जमाअत का मरकज़ भी ईमानीयत में दाख़िल हो गया है और उसका मुख़ालिफ़ काफ़िर क़रार पाता है।" (सफ़ा – ६१)

इसी किताब के हाशिये पर एक दूसरे तबलीग़ी कारकुन मौलवी नूर मुहम्मद चन्दीनी लिखते हैं :–

"अगर ज़रा भी ताक़त हासिल हो जाये और जो मरकज़ न आये, तो उसको बिल्कुल मुरतद के दर्जे में समझते हैं।" **(सफ़ा - ६०)**

तबलीग़ी जमाअत के इन पुराने कारकुनों के यह बयानात सामने रख कर फ़ैसला कीजिये कि अपने मफ़्तूहा इलाक़े में तबलीग़ी जमाअत तफ़रीक़ बैनल-मुस्लेमीन की यह जो मुहिम चला रहे हैं, क्या एक लमहा के लिये भी आप यह बर्दाश्त कर सकेंगे कि आपके महफ़ूज़ इलाक़े में भी तबलीग़ी जमाअत दाख़िल हो कर इसी तरह का फ़ित्ना बरपा करें। अगर आप इसके लिये तैयार नहीं हैं। तो ख़तरे का शिकार होने से पहले, खतरे का सद्दे बाब कीजिये।

अपने बारे में तबलीग़ी जमाअत वालों का ख़ुद इक़रार कि वह बड़े सख़्त वहाबी हैं!

ज़माना-ए-हाल के फ़िर्क़ों में फ़िरक़ा-ए-वहाबिया ने इस्लाम की हुरमत और अम्बिया, औलिया की अज़मत पर जिस बेदर्दी से हमला किया है, वह तारीख़ का एक निहायत अलमनाक वाक़या है। इसी फ़िरक़-ए-वहाबिया नज्दीया के साथ तबलीग़ी जमाअत के सरबराह मौलाना ज़करिया शैख़ुल हदीस, सहारनपुर और मौलाना मन्ज़ूर नौमानी का वह तअल्लुक़ मुलाहिज़ा फरमाइये, जिसे सवानेह मौलाना युसुफ़ कांधेलवी के मुसन्निफ़ के बयान के मुताबिक़, मौलाना इल्यास के इन्तेक़ाल के बाद उनकी जांनशीनी के मसले पर गुफ़्तगू करते हुए मौलाना मन्ज़ूर नौमानी ने ज़ाहिर किया था कि :-

"हम बड़े सख़्त वहाबी हैं। हमारे लिये इस बात में कोई ख़ास कशिश न होगी कि यहां हज़रत की क़ब्र मुबारक है, यह मस्जिद है जिसमें हज़रत नमाज़ पढ़ते थे।" **(सवानेह मौलाना यूसुफ़, सफ़ा - १६२)**

मौलाना ज़करिया ने इसके जवाब में फ़रमाया :-

"मौलवी साहब मैं ख़ुद तुम से बड़ा वहाबी हूँ। तुम्हें मशवरा दूँगा कि हज़रत चचा जान की क़ब्र और हज़रत के हुजरे और दरे व दीवार की वजह से यहाँ आने की ज़रूरत नहीं।" (सफ़ा – १६३)

अपने वहाबी होने का ख़ुद अपनी ज़ुबान से यह ख़ुला हुआ इक़रार मुलाहिज़ा फरमाइये। कोई दूसरा उनके बारे में कहता तो इल्ज़ाम समझा जाता। लेकिन ख़ुद अपने इक़रार क़ा मतलब सिवा इसके और क्या हो सकता है कि यह हज़रात हक़ीक़तन वहाबी हैं और उनके पास एतक़ाद व अमल का जो कुछ भी सरमाया है, वह मदीना का नहीं नज्द का है, और ज़ाहिर है कि इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी का मज़हब जब उन्हें ख़ुद पसन्द है तो यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि जिस तबलीग़ी क़ाफ़िले की वह क़्यादत कर रहे हैं, उसे वह किस तरफ़ ले जाना चाहेंगे।

नजदी हुकूमत के साथ तबलीग़ी जमाअत का मुआहदा

बात इतनी ही पर ख़त्म नहीं हो गयी है, बकि नज्द के वहाबी फ़िरक़े के साथ तबलीग़ी जमाअत का ज़ेहनी और फ़िक्री तअल्लुक़ अब एक मुआहदे के शक्ल में हमारे सामने आ गया है। जैसा कि तबलीग़ी जमाअत के सरबराह मौलाना अबुल हसन अली नज्दी ने अपनी किताब "मौलाना इल्यास और उनकी दीनी दावत" में लिखा है कि १४ मार्च १६३८ ई० को बानिये तबलीग़ मौलाना इल्यास अपना एक वफ़्द लेकर नज्द के दरबार में हाज़िर हुए। और उसके सामने तबलीग़ी जमाअत के अग़राज़ व मक़ासिद को पेश किया। जिस पर सुल्तान ने अपनी ख़ुशनूदी का इज़हार किया। अख़ीर में यह वफ़्द नज्दी हुकूमत के शैख़ुल-इस्लाम के पास गया और उनके सामने मक़ासिदे तबलीग़ का कागज़ पेश किया। जिसकी बाबत मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने लिखा है कि :–

"उन्होंने बहुत एजाज़ व इकराम के साथ और हर बात की ख़ूब-ख़ूब ताईद की और ज़बानी पूरी हमदर्दी व इआनत का वादा किया।"

(दीनी दावत, सफ़ा-१०१)

अब आप ने समझ लिया होगा कि तबलीग़ी जमाअत के मरकज़ में सोने और चाँदी की नहरें बह रही हैं, वह कहाँ से आती है? यह वही नजदी हुकूमत का रेयाल है, जो मुआहदे के मुताबिक़ उन्हें दिया जा रहा है। ताकि हिन्दुस्तान के सादा लौह मुसलमानों का ईमान ग़ारत करके उन्हें नजदी वहाबियों की तरह रसूले अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और औलिया-ए-किराम की तरफ़ से बद-अक़ीदा और गुस्ताख़ बना दिया जाये। यह नजदी हुकूमत के

एजेन्ट हैं, जो कलिमा और नमाज़ के नाम पर सादा लौह मुसलमानों को इकट्ठा करके उनके अक़ीदा व ईमान का शिकार करना चाहते हैं।

तबलीग़ी जमाअत अहादीस की रौशनी में

नज्द के वहाबी मजहब को दुनिया में फै़ला कर मुसलमानों को बद-अक़ीदा बनाने वालो यही वह तबलीग़ी जमाअत हैं जिसके मुतअल्लिक़ रसूले अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निहायत वाज़ेह निशानियों के साथ चौदह सौ (१४००) बरस पहले अपनी उम्मत को ख़बरदार किया है कि अब तुम उनका ज़माना पाओ तो उनसे दूर रहना और उनके ख़िलाफ़ जिहाद करना। इस मज़मून की हदीस ज़ैल में मुलाहिज़ा फ़रमायें :-

(१) "हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अख़ीर ज़माने में नौ उम्र और कम समझ लोगों की एक जमाअत निकलेगी, बातें वह बज़ाहिर अच्छी कहेंगे, लेकिन ईमान उनके हलक़ से नीचै नहीं उतरेगा। वह दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। पस तुम उन्हें जहां पाना क़त्ल कर देना कि क़्यामत के दिन उनके क़ातिल के लिये बड़ा अज्ऱ व सवाब है।"

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द-२, सफ़ा १०२४)

(२) "हज़रते शरीक इब्ने शहाब रज़ि अल्लाहु अन्हु से मनकूल है कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि एक गिरोह निकलेगा, वह क़ुरआन पढ़ेंगे, लेकिन क़ुरआन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वह इस्लाम से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार से उनकी ख़ास पहचान 'सर मुढ़ाना' है। वह हमेशा गिरोह दर गिरोह

निकलते रहेंगे। यहां तक कि उनका आख़िरी दस्ता मसीहुद्-दज्जाल के साथ निकलेगा। अब तुम उनसे मिलोगे तो तबीयत और सरिश्त के लिहाज से बद-तरीन पाओगे।"

(मिश्कात शरीफ़, पेज-३०६)

(३) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रते अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मिश्कात शरीफ़ में यह हदीस नक़ल की गई है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरी उम्मत में इख़्तिलाफ़ व तफ़रीक़ का वाक़े होना मुक़द्दर बन चुका है। पस इस सिलसिले में एक गिरोह निकलेगा जिसकी बातें बज़ाहिर दिल फरेब व ख़ुशनुमा होगी, लेकिन किरदार गुमराह कुन और ख़राब होगा। वह कुरआन पढ़ेंगे, लेकिन कुरआन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा, वह दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर से शिकार निकल जाता है। फिर दीन की तरफ वापस लौटना नहीं नसीब होगा। यहां तक कि तीर अपने कमान की तरफ लौट आये। वह अपनी तबीयत और सरिश्त के लिहाज़ से बदतरीन मख़लूक़ होंगे। वह लोगों को कुरआन और दीन की तरफ बुलायेंगे, हालांकि दीन से उनका कुभी तअल्लुक़ न होगा। जो उनसे क़त्ताल करेगा, वह ख़ुदा का मुक़र्रब तरीन बन्दा होगा। सहाबा ने अर्ज़ किया कि उनको खास पहचान क्या होगी या रसूलुल्लाह! फ़रमाया सर मुढ़ाना।"

(मिश्कात सफ़ा-३०८)

(४) "मिश्कात शरीफ़ में हज़रते अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मनकूल है, वह कहते हैं कि हम लोग हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे

और हुज़ूर माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे कि जुलख़्वेसरा का नाम एक शख़्स जो क़बीलये बनी तमीम का रहने वाला था, आया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल इन्साफ़ से काम लो। हुज़ूर ने फ़रमाया, अफ़सोस तेरी जसारत पर मैं ही इंसाफ़ नहीं करूंगा तो और कौन इंसाफ़ करने वाला है। अगर मैं इंसाफ़ नहीं करता तो ख़ाइब व ख़ासिर हो चुका होता।

हज़रत उमर से जब नहीं रहा गया तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे इजाज़त दीजिये मैं उसकी गर्दन मार दूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया, इसे छोड़ दो। यह अकेला नहीं है। इसके बहुत से साथी हैं, जिनकी नमाज़ों और जिनके रोज़ों को देख कर तुम अपनी अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर समझोगे। वह कुरआन पढ़ेंगे, लेकिन कुरआन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। इन सारी ज़ाहिरी ख़ूबियों के बावजूद, वह दीन से ऐसे निकल जायेंगे, जैसे तीर शिकार से निकल जाता है।'

(बुख़ारी शरीफ़, जिल्द-२, पेज-१०२४)

ज़मीर का फ़ैसला

इन हालात में अब मोमिन का ज़मीर ही उसका फ़ैसला करेगा कि रसूले पाक को ख़ुशनूदी तबलीग़ी जमाअत के साथ मुनसलिक होने में है या उससे एलाहदा रहने में। सवाल उन लोगों से है जिन्हें सिर्फ़ ख़ुदा व रसूल की ख़ुशनूदी का जज़्बा तबलीग़ की तरफ खींच कर ले जाता है। बाक़ी रहे वह लोग जो किसी माद्दी मुनफ़अत की लालच या मज़हबी शकावत के जज़्बे में साथ हो गये हैं, उनकी वापसी की तवक़्क़ा नहीं की जा सकती।

ख़त्म शुद

बेहतरीन सदक़ये जारिया

इस फ़ित्ने के दौर में सबसे बड़ा सदक़ये जारिया यह है कि अपने मरहूमीन के नाम से दीनी किताब मुसलमानों में तक़सीम कीजिये। इससे एक तरफ जहाँ हमारे मरहूमीन को बेपनाह दाइमी सवाबे आख़िरत हासिल होगा, वहाँ दूसरी तरफ तबलीग़ी सुन्नीयत का अहम फ़रीज़ा भी अनजाम पायेगा।

लेहाज़ा इस कारे ख़ैर का इरादा करने से पहले हमारी मतबूआत पर एक नज़र पहले डाल कर मुफ़ीद किताबों का इंतिख़ाब करें और इस सिलसिले में हम से राबता पैदा करें।

दीन का सच्चा दर्द रखने वालों से एक अहम अपील

यह मुख़्तसर किताब "तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब" जो अपने अन्दाज़े ब्यान और जामेईयत के एतबार से बिल्कुल मुन्फ़रिद किताब है। जिसने मनज़रे आम पर आते ही ज़हेन व फ़िक्र की दुनिया में एक इनक़िलाब बरपा कर दिया। कितने भोले–भाले सुन्नी मुसलमान जो अपनी सादा लौही की वजह से तबलीग़ी जमाअत के दामे फ़रेब में आ चुके थें इस किताब के पढ़ने और सुनने के बाद इस जमाअत से अलाहिदा हो गए और अच्छी तरह समझ लिया कि यह कलिमा व नमाज़ के आड़ में वहाबियत की तबलीग़ है। और यह शैली कट्टर वहाबी जमाअत से तअल्लुक़ रखती है जो बिला शुबा एक बद–अक़ीदा और गुमराहकुन जमाअत है।

लेहाज़ा : मुसलमानों को इस फ़ितने से आगाह करने और उन्हें इससे निजात दिलाने के लिए इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि इस किताब को घर-घर पहुँचाया जाए और ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में तक़्सीम किया जाए। अह्ले सुन्नत व जमाअत के जो अह्ले ख़ैर हज़रात इस मक़्सदे ख़ैर के लिए किताब मंगाना चाहेंगे उन्हें एक हज़ार किताब या कम पर ख़ुसूसी रिआयत दी जाएगी। कोई हक़ साहब यह काम न कर सकें तो चन्द हज़रात शरीक हो जाएँ। उूर्द और हिन्दी दोनों में मौजूद है। इस पते पर राबता क़ायम करें। ❖❖❖

RAZAVI KITAB GHAR

425/2 Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6

Contact:. 9350505879,011-23264524

E-mail ID - razavikitabghar@gmail.com

Rs. 10/-